Name - Chandan Kumar

College Name - Shakuntalam Institue of Teacher's Education, Sasaram Rohatas - 821115

Subject Name - [समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ - (F1)]

Unit - 5

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE / / 20
PAGE

2. समय तथा शक्ति का सदोपयोग :-

निश्चित यानि नियोजित पाठ्यचर्या अध्यापक और विद्यार्थी दोनो के कार्य निश्चित कर देता है कि अध्यापको को विद्यार्थियों के सीखने में क्या सहायता करनी है तथा विद्यार्थी को क्या सीखना है। अध्यापक और विद्यार्थी किसी को भी भटकने की गुंजाइश नही रहती है। नियोजित पाठ्यचर्या से समय का सदोपयग होता है। जैसे- बालक जो कोर्स कर रहा है वह कितने साल का है और जितने साल का है उतने ही समय में पुरी सिलेबस को समाप्त करना होता है। अर्थात समय को ध्यान मे रखते हुए कोर्स को पुरा कराया जाता है जिससे समय का सदोपयोग होता है और बालक के शक्ति का भी सदोपयोग होता है कि वह कितना सीखा, समझा आदि।

3. बच्चों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है:-

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो स्वपरियोजना क्रियाओं में रुचि लेता है और ऐसा कार्य करना चाहता है जिससे उसकी वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

है और भावी आवश्यकताओं की पूर्ति की सम्भावना होती है। अर्थात पाठ्यचर्या से बच्चों की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है साथ ही बच्चों को उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान करना शामिल है।

4. पाठ्यपुस्तकों का निर्माण संभव होता है:-

किसी स्तर की निश्चित पाठ्यचर्या में उस स्तर पर पढ़ाये जाने वाले विषयों की सामग्री भी निश्चित होता है इसके आधार पर लेखक पाठ्यपुस्तकें तैयार करते हैं और उनमें आवश्यक सामग्री को भी ध्यान देते हैं।

5. शिक्षा स्तर का स्तर समान रहता है:-

निश्चित पाठ्यचर्या से पूरे समाज की शिक्षा का स्तर समान रहता है। उसके परिणामों से हमें शिक्षा में सुधार की सही दिशा प्राप्त होती है। अनिश्चित पाठ्यचर्या की स्थिति में हम शिक्षा स्तर के उठने अथवा गिरने के कारणों का पता नहीं लगा सकते और स्थिति शिक्षा में सुधार नहीं किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

* ~~पाठ्यचर्या के विविध आधार (पाठ्यचर्या निर्माण)~~

6. मूल्यांकन सरल एवं संभव होता है:-

स्तर विशेष के लिए पाठ्यचर्या निश्चित होते है। विशेष स्तर के विद्यार्थियों की योग्यता का मूल्यांकन करना संभव होता है। यदि किसी स्तर के लिए कोई पाठ्यचर्या नही होगी तो अध्यापक बच्चों की योग्यता का मूल्यांकन कैसे करेंगे। अध्यापक किसी विशेष स्तर के बच्चों की योग्यता का मूल्यांकन इस पाठ्यचर्या के आधार पर ही करते है।

* पाठ्यचर्या निर्माण के विविध आधार (पाठ्यचर्या निर्माण के)

बालक की शिक्षा व्यवस्था समाज के द्वारा ही होता है, इसलिए पाठ्यचर्या का निर्माण समाज तथा व्यक्ति के आधार पर किया जाना आवश्यक होता है साथ ही समाज विद्यालयों से अपेक्षा करता है कि संस्कृति के संरक्षण के साथ-साथ इसके प्रमुख बातों को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक प्रसार किया जाए, इसलिए पाठ्यचर्या का निर्माण व्यक्ति और समाज के प्रकृति के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्यों, मान्यताओं को ध्यान मे रखकर किया जाता

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE : / /20
PAGE :

है। अर्थात् पाठ्यचर्या का निर्माण निम्न आधारों पर किया जाता है-

1. मनोवैज्ञानिक आधार (Psychological Basis)

:- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक अच्छी पाठ्यचर्या का निर्माण करना आवश्यक होता है। अर्थात् बालक की प्रकृति, उसके विकास, विकास के विभिन्न स्तरों पर उसकी आवश्यकताओं, क्षमताओं योग्यताओं, रुचियों आदि को ध्यान में रखकर ही पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है। इसलिए अर्थात् पाठ्यचर्या का निर्माण मनोवैज्ञानिक आधार पर किया जाना चाहिए।
अर्थात किस स्तर के बच्चे शिक्षा को किस सिमा तक ग्रहण करेंगे इसका पता मनोविज्ञान के द्वारा ही चलता है। मनोविज्ञान में बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास का अध्ययन किया जाता है इस अध्ययन के अभाव में हम यह नहीं निश्चित कर सकते है किस स्तर के बच्चों को क्या सिखाया जाए। इसलिए पाठ्यचर्या का निर्माण मनोविज्ञान के आधार पर किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner